वह बोझ जिसे परमेश्वर ने कभी आपको उठाने के लिए नहीं कहा

कैसे पास्टर स्वतंत्रता, आनंद और वास्तविक फल पाते हैं

डॉ. ब्रायन वुड

ट्रांसफॉर्मिंग लाइव्स पब्लिशिंग

© दिसंबर 2025

Contents

प्रस्तावना: एक निमंत्रण जिसे अधिकतर पास्टर कभी स्वीकार नहीं करते 3

अध्याय 1: वह वर्ष जब आप काम नहीं करते 5

अध्याय 2: वह एक बात जिसे जल्दी नहीं किया जा सकता 13

अध्याय 3: वह दिन जब परमेश्वर ने कहा, रुक जाओ 22

अध्याय 4: पहली कलीसिया 30

अध्याय 5: डाल का रहस्य 39

अध्याय 6: केवल तुम्हारे लिए कभी नहीं था 46

अध्याय 7: वह गुफा जिसने अगुवे बनाए 54

अध्याय 8: खतरनाक सिंहासन 62

अध्याय 9: जब बोझ अंततः उतर गया 71

परिशिष्ट A 77

परिशिष्ट B 85

प्रस्तावना: एक निमंत्रण जिसे अधिकतर पास्टर कभी स्वीकार नहीं करते

अधिकतर पास्टर परमेश्वर से प्रेम करते हैं।
अधिकतर पास्टर लोगों से प्रेम करते हैं।
अधिकतर पास्टर सब कुछ देने के लिए तैयार रहते हैं।

और बहुत-से सचमुच दे देते हैं।

वे अपना समय देते हैं।
वे अपनी शक्ति देते हैं।
वे अपना ध्यान देते हैं।
वे अपना जीवन देते हैं।

फिर भी, चुपचाप, अक्सर बिना किसी चेतावनी के, कुछ कम होने लगता है।

आनंद कर्तव्य बन जाता है।
शांति दबाव बन जाती है।
प्रेम जिम्मेदारी बन जाता है।

वे सेवा करते रहते हैं।

लेकिन अंदर कुछ थकने लगता है।

इसलिए नहीं कि वे परमेश्वर से प्रेम नहीं करते।

बल्कि इसलिए कि संभव है वे कुछ ऐसा उठा रहे हैं, जिसे उठाने के लिए परमेश्वर ने उनसे कभी नहीं कहा।

यह पुस्तक एक निमंत्रण है।

परमेश्वर से कम प्रेम करने के लिए नहीं।

बल्कि उनसे अलग तरीके से प्रेम करने के लिए।

कम सेवा करने के लिए नहीं।

बल्कि एक अलग स्थान से सेवा करने के लिए।

सेवकाई छोड़ने के लिए नहीं।

बल्कि उस जीवन और अगुवाई को खोजने के लिए, जिसे स्वयं यीशु ने जिया।

इस यात्रा में, संभव है आप स्वयं को पहचानें।

संभव है आप उन बातों को देखें, जिन्हें आपने महसूस तो किया था, पर कभी शब्द नहीं दिए।

और संभव है आप ऐसी स्वतंत्रता खोज लें, जिसके बारे में आपने कभी सोचा भी नहीं था।

इन पन्नों में कुछ भी आपसे कम विश्वासयोग्य बनने के लिए नहीं कहता।

केवल इतना कि आप परमेश्वर के हृदय के साथ और अधिक एक हो जाएँ।

बाकी, आप स्वयं खोज लेंगे।

अध्याय 1: वह वर्ष जब आप काम नहीं करते

उत्तर भारत के एक छोटे से गाँव में, पास्टर यहोशू हर सुबह 4:30 बजे उठते थे।

वह इसलिए जल्दी नहीं उठते थे क्योंकि वे पूरी तरह विश्राम कर चुके थे।
वे इसलिए उठते थे क्योंकि किसी को उनकी ज़रूरत थी।

किसी न किसी को हमेशा उनकी ज़रूरत होती थी।

एक आदमी उनकी प्रार्थना के लिए उनके फाटक के बाहर मोटरसाइकिल पर बैठा इंतज़ार करता था, काम पर जाने से पहले।
एक महिला ने पिछली रात तीन बार फोन किया था क्योंकि उसके बेटे को बुखार था।
एक कलीसिया सदस्य चाहता था कि वह परिवार के झगड़े को सुलझाएँ।
दूसरा किराया भरने में मदद चाहता था।
दो जवान लोग चेलापन चाहते थे।
तीन विधवाओं को प्रोत्साहन की ज़रूरत थी।

और रविवार आने वाला था, जिसका मतलब था कि एक संदेश अभी भी उनके अंदर कहीं अधूरा और जिद्दी पड़ा हुआ था।

जब तक सूरज निकलता, यहोशू कई घंटे काम कर चुके होते थे।

उन्हें विश्वास था कि इससे परमेश्वर प्रसन्न होते हैं।

आखिर, क्या बलिदान आत्मिक नहीं है?

क्या थक जाना प्रेम का प्रमाण नहीं है?

क्या यीशु ने नहीं कहा कि अपना जीवन दे दो?

इसलिए वे चलते रहे।

जब उनके शरीर ने रुकने को कहा, तब भी वे चलते रहे।

जब उनकी पत्नी ने उनसे घर पर रहने के लिए कहना बंद कर दिया, तब भी वे चलते रहे।

जब उनके बच्चों ने रात के खाने पर उनकी उम्मीद करना छोड़ दिया, तब भी वे चलते रहे।

वे चलते रहे क्योंकि उन्हें विश्वास था कि परमेश्वर को उनकी मदद की ज़रूरत है।

और वे अकेले नहीं थे।

पूरे भारत में, हजारों पास्टर इसी तरह का जीवन जी रहे थे।

सुबह जल्दी उठना।

देर रात तक काम करना।

अनगिनत ज़रूरतें।

लगातार दबाव।

कोई खाली जगह नहीं।

कोई विश्राम नहीं।

कई लोग चुपचाप विश्वास करते थे कि सबसे पवित्र पास्टर वही हैं जो सबसे ज़्यादा व्यस्त हैं।

लेकिन परमेश्वर ने इसके बारे में पहले ही कहा था।

और जो उन्होंने कहा, वह लगभग गैर-जिम्मेदार जैसा लगता था।

उन्होंने अपने लोगों से कहा कि वे पूरे एक वर्ष तक काम बंद कर दें।

एक दिन नहीं।

एक सप्ताह नहीं।

एक वर्ष।

हर सातवें वर्ष, इस्राएलियों को आज्ञा दी गई कि वे अपनी भूमि को विश्राम दें।

कोई बुवाई नहीं।

कोई कटाई नहीं।

कोई आय नहीं।

कोई भोजन उत्पादन नहीं।

कुछ नहीं।

किसानों के लिए, यह आज्ञा आर्थिक रूप से बिल्कुल समझ में नहीं आती थी।

उनकी भूमि ही उनका जीवन थी।

उनकी फसल ही उनकी आय थी।

उनकी कटाई ही उनका भोजन, उनकी सुरक्षा, और उनका भविष्य थी।

रुकने का मतलब था जोखिम।

रुकने का मतलब था असुरक्षा।

रुकने का मतलब था भरोसा।

परमेश्वर ने स्पष्ट कहा:

"छः वर्ष तक तुम अपने खेत में बीज बोओ... लेकिन सातवें वर्ष भूमि के लिए पूरा विश्राम का सब्त होगा।"
(लैव्यव्यवस्था 25:3–4, ERV)

उस वर्ष भोजन की मेज़ पर होने वाली बातचीत की कल्पना कीजिए।

"हम क्या खाएँगे?"

"अगर कुछ नहीं उगा तो?"

"अगर परमेश्वर ने सहायता नहीं की तो?"

क्योंकि यह आज्ञा खेती से भी गहरी बात को प्रकट करती थी।

यह दिखाती थी कि वे किस पर भरोसा करते हैं।

अपने हाथों पर।

या अपने परमेश्वर पर।

परमेश्वर ने उनके डर को पहले ही जान लिया था।

उन्होंने उनके पूछने से पहले ही उत्तर दिया:

"मैं छठे वर्ष में तुम्हें आशीर्वाद दूँगा, और वह तीन वर्षों के लिए पर्याप्त उपज देगा।"
(लैव्यव्यवस्था 25:21, ERV)

बस मुश्किल से पर्याप्त नहीं।

बहुतायत से।

पहले वर्ष के लिए।

विश्राम के वर्ष के लिए।

और उसके बाद के वर्ष के लिए।

परमेश्वर ने बिना उनके प्रयास के बहुतायत का वादा किया।

इसका मतलब था कि उनका जीवन अब उनके काम से नहीं आएगा।

यह उनके भरोसे से आएगा।

यह एक सच्चाई को प्रकट करता है, जिस पर आज भी बहुत लोग विश्वास करने के लिए संघर्ष करते हैं।

परमेश्वर को उनकी लगातार मेहनत की ज़रूरत नहीं थी।

उन्हें उनका भरोसा चाहिए था।

क्योंकि भरोसा हमेशा प्रावधान से पहले आता है।

काम सुरक्षित लगता है।

भरोसा खतरनाक लगता है।

काम नियंत्रण हमारे हाथ में देता है।

भरोसा नियंत्रण परमेश्वर के हाथ में देता है।

काम हमें श्रेय लेने देता है।

भरोसा परमेश्वर को महिमा देता है।

और यहीं कई पास्टर चुपचाप अपना मार्ग खो देते हैं।

वे रुकते नहीं, क्योंकि रुकना उन्हें आत्मिक नहीं लगता।

विश्राम करना उन्हें आलस्य लगता है।

धीमा होना उन्हें गैर-जिम्मेदार लगता है।

अगर वे काम नहीं कर रहे, तो उन्हें लगता है कि वे परमेश्वर को निराश कर रहे हैं।

इसलिए वे वह उठाते हैं, जिसे उठाने के लिए परमेश्वर ने उनसे कभी नहीं कहा।

वे वह उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं, जिसे केवल परमेश्वर उत्पन्न कर सकते हैं।

वे वह फल उत्पन्न करने के लिए काम करते हैं, जो केवल भरोसे से उगता है।

लेकिन अधिक काम करने की हमेशा कीमत होती है।

यह आनंद को खत्म कर देता है।

यह निकटता को कर्तव्य में बदल देता है।

यह बुलाहट को बोझ बना देता है।

यह आत्मा को धीरे-धीरे कमजोर कर देता है।

और यह केवल पास्टर तक सीमित नहीं रहता।

यह विवाह में फैल जाता है।

जीवनसाथी स्वयं को दूसरे स्थान पर महसूस करता है।

बातचीत केवल आवश्यक बन जाती है।

साथ रहना दुर्लभ हो जाता है।

नाराज़गी चुपचाप बढ़ती है।

पाप के कारण नहीं।

थकान के कारण।

पास्टर स्वयं से कहता है कि वह यह परमेश्वर के लिए कर रहा है।

उसकी पत्नी सोचती है कि परमेश्वर को हमेशा वही मिलता है जो बच जाता है।

उसके बच्चे सीखते हैं कि सेवकाई उनके पिता को उनसे दूर ले जाती है।

किसी ने इसे इस तरह होने की योजना नहीं बनाई थी।

यह धीरे-धीरे हुआ।

एक देर रात में।

एक छूटे हुए भोजन में।

एक और सभा।

एक और संदेश।

एक और आपातकाल।

जब तक काम ने भरोसे की जगह नहीं ले ली।

परमेश्वर ने कभी सेवकाई को मानव शक्ति पर चलाने के लिए नहीं बनाया।

उन्होंने इसे मानव भरोसे पर चलाने के लिए बनाया।

सब्त के वर्ष ने यह सिद्ध किया।

जब इस्राएलियों ने काम बंद किया, परमेश्वर काम करते रहे।

जब उन्होंने उत्पन्न करना बंद किया, परमेश्वर प्रावधान करते रहे।

जब उन्होंने विश्राम किया, परमेश्वर ने कार्य किया।

क्योंकि फल कभी प्रयास से नहीं आया।

यह हमेशा बने रहने से आया है।

बाद में यीशु ने इसे और स्पष्ट कहा:

"मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"
(यूहन्ना 15:5, ERV)

कम नहीं।

कुछ भी नहीं।

इसका मतलब यह भी सच है।

उनके साथ, फल बिना संघर्ष के आता है।

यही वह निमंत्रण है जिसे कई पास्टरों ने कभी वास्तव में स्वीकार नहीं किया।

परमेश्वर पर इतना भरोसा करना कि वे रुक सकें।

यह विश्वास करना कि जब वे विश्राम करते हैं, परमेश्वर काम करते हैं।

यह विश्वास करना कि प्रावधान उनकी थकान पर निर्भर नहीं है।

यह विश्वास करना कि उनकी बुलाहट उनके लगातार प्रयास पर निर्भर नहीं है।

यह विश्वास करना कि परमेश्वर उनसे बेहतर प्रबंध करने वाले हैं।

इस तरह का भरोसा डरावना लगता है।

क्योंकि यह नियंत्रण को हटा देता है।

लेकिन यह दबाव को भी हटा देता है।

परमेश्वर ने कभी अपने सेवकों से अपने राज्य को उठाने के लिए नहीं कहा।

उन्होंने उनसे उस पर भरोसा करने के लिए कहा।

पास्टर यहोशू अभी यह नहीं जानते थे।

वे केवल काम करना जानते थे।

लेकिन परमेश्वर उन्हें भरोसा करना सिखाने वाले थे।

और यह सब कुछ बदल देगा।

अध्याय 2: वह एक बात जिसे जल्दी नहीं किया जा सकता

घर भरा हुआ था।

उन लोगों के पैरों में अभी भी धूल लगी हुई थी, जो मीलों चलकर वहाँ पहुँचे थे।
उनकी आवाज़ें उस छोटे से घर में गूंज रही थीं।
हँसी उठ रही थी।
कहानियाँ बह रही थीं।
वातावरण में महत्व की ऊर्जा भरी हुई थी।

यीशु आ गए थे।

जब भी यीशु आते थे, सब कुछ बदल जाता था।

मरियम फर्श पर बैठी थी, उनके पैरों के पास।

वह वहाँ इसलिए नहीं बैठी थी क्योंकि उसके पास कहीं और जाने की जगह नहीं थी।

वह वहाँ इसलिए बैठी थी क्योंकि कोई और जगह इसकी बराबरी नहीं कर सकती थी।

उनके शब्द उसके अंदर कुछ कर रहे थे।

उन्होंने उसकी साँसों को धीमा कर दिया।

उन्होंने उसके विचारों को शांत कर दिया।

उन्होंने उस बोझ को उठा लिया, जिसे वह जानती भी नहीं थी कि वह उठा रही है।

शांति उस पर ऐसे आकर ठहर गई जैसे एक कंबल।

यह अनुशासन नहीं था।

यह आनंद था।

वह कुछ साबित नहीं कर रही थी।

वह आनंद ले रही थी।

हर शब्द जीवित महसूस हो रहा था।

हर वाक्य व्यक्तिगत महसूस हो रहा था।

परमेश्वर का पुत्र उसके घर में बैठा था, और वह उनके साथ बैठी थी, हर क्षण को अपने अंदर ले रही थी।

वह कल के बारे में नहीं सोच रही थी।

वह जिम्मेदारियों के बारे में नहीं सोच रही थी।

वह उनके बारे में सोच रही थी।

कमरे के दूसरी ओर, मार्था तेज़ी से काम कर रही थी।

बहुत तेज़ी से।

उसके हाथ लगातार काम कर रहे थे।

अनाज पीसना।

रोटी बनाना।

बर्तन चलाना।

लकड़ी ठीक करना।

पानी लाना।

यह महत्वपूर्ण था।

यीशु की सेवा करना महत्वपूर्ण था।

अतिथि-सेवा महत्वपूर्ण थी।

प्रेम अक्सर काम जैसा दिखता है।

लेकिन उसके अंदर कुछ बदल गया था।

उसके हाथ काम कर रहे थे।

उसका दिल कसता जा रहा था।

हर बार जब वह मरियम को देखती, उसका सीना जल उठता।

मरियम बैठी थी।

मार्था सेवा कर रही थी।

मरियम सुन रही थी।

मार्था मेहनत कर रही थी।

मरियम विश्राम कर रही थी।

मार्था नाराज़ हो रही थी।

यह उचित नहीं लग रहा था।

अंत में, उसकी निराशा बाहर आ गई।

“प्रभु,” उसने कहा, उसकी आवाज़ थकान से भरी हुई थी,
“क्या आपको चिंता नहीं है कि मेरी बहन ने मुझे अकेले सेवा करने के लिए छोड़ दिया है?
उसे कहिए कि मेरी मदद करे।”

उसे उम्मीद थी कि यीशु उससे सहमत होंगे।

उसे उम्मीद थी कि वे मरियम को सुधारेंगे।

उसे उम्मीद थी कि यीशु मरियम को ठीक करेंगे।

लेकिन इसके बजाय, यीशु ने मार्था को सुधारा।

“मार्था, मार्था,” उन्होंने कहा।

उन्होंने उसका नाम दो बार लिया।

गुस्से में नहीं।

प्रेम में।

“तू बहुत-सी बातों के लिए चिंता और परेशान होती है।”

बहुत-सी बातें।

सभाएँ।

भोजन।

जिम्मेदारियाँ।

उम्मीदें।

अच्छी बातें।

ज़रूरी बातें।

भारी बातें।

“लेकिन एक ही बात ज़रूरी है।”

एक बात।

दस नहीं।

बीस नहीं।

एक।

“मरियम ने अच्छा भाग चुना है, और वह उससे छीना नहीं जाएगा।”

(लूका 10:41–42, ERV)

कमरे में शांति छा गई।

यीशु ने उसे सेवा करने के लिए नहीं डाँटा।

उन्होंने उसे चिंता करने के लिए सुधारा।

उन्होंने उसके काम को नहीं सुधारा।

उन्होंने उसकी प्राथमिकता को सुधारा।

क्योंकि मार्था विश्वास करती थी कि यीशु की सेवा करना, उनके साथ रहने से अधिक महत्वपूर्ण है।

मरियम बेहतर जानती थी।

मरियम ने वह समझा, जिसे आज भी बहुत लोग नहीं समझते।

यीशु उसके काम को लेने के लिए नहीं आए थे।

वे उसे लेने आए थे।

उसने उन्हें अपना ध्यान दिया।

उसने उन्हें अपना प्रेम दिया।

उसने उन्हें अपनी उपस्थिति दी।

और यीशु ने इसे वह एक बात कहा जो सबसे महत्वपूर्ण है।

आज, पूरे भारत में, अनगिनत पास्टर मार्था की तरह जीवन जीते हैं।

वे जल्दी उठते हैं।

वे जल्दी घर से निकलते हैं।

वे जल्दी प्रार्थना करते हैं।

वे जल्दी पढ़ते हैं।

वे घड़ी देखते हैं।

पाँच मिनट।

सात मिनट।

दस मिनट।

इतना कि वे कह सकें कि उन्होंने किया।

इतना कि उनका मन शांत हो जाए।

इतना कि वे असली काम पर जा सकें।

क्योंकि अंदर से, कई लोग विश्वास करते हैं कि यीशु के साथ उनका समय सेवकाई की तैयारी है।

स्वयं सेवकाई नहीं।

इसलिए वे उनकी उपस्थिति से जल्दी निकलते हैं ताकि उनकी सेवा कर सकें।

वे उनके साथ बैठते हैं।

लेकिन उनका मन कहीं और होता है।

संदेश उनका इंतज़ार कर रहे हैं।

लोग उनका इंतज़ार कर रहे हैं।

समस्याएँ उनका इंतज़ार कर रही हैं।

काम उनका इंतज़ार कर रहा है।

और यीशु उनका इंतज़ार कर रहे हैं।

वे उनका आनंद नहीं लेते।

वे उन्हें सहन करते हैं।

वे उनमें आनंद नहीं लेते।

वे उन्हें पूरा करते हैं।

शांत समय एक और काम बन जाता है।

एक और जिम्मेदारी।

एक और बोझ।

एक और चीज़ जिसे खत्म करना है।

वे समय के सृष्टिकर्ता के साथ बैठकर घड़ी देखते हैं।

वे सोचते हैं, मुझे जल्दी करनी है।

वे सोचते हैं, मुझे काम पर वापस जाना है।

वे सोचते हैं, लोगों को मेरी ज़रूरत है।

वे भूल जाते हैं कि यीशु ने कभी नहीं कहा कि लोगों को उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।

उन्होंने कहा एक बात सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

वे स्वयं।

यही आधुनिक सेवकाई की दुखद स्थिति है।

कई पास्टर हर दिन यीशु की सेवा करते हैं।

लेकिन बहुत कम उनके साथ बैठते हैं।

वे उनके काम को जानते हैं।

वे उनके विश्राम को नहीं जानते।

वे उनके मिशन को जानते हैं।

वे उनकी उपस्थिति को नहीं जानते।

वे उनकी जिम्मेदारी को जानते हैं।

वे उनके आनंद को नहीं जानते।

समय के साथ, यह आत्मा को खाली कर देता है।

निकटता के बिना काम बोझ बन जाता है।

विश्राम के बिना सेवा थका देती है।

प्राप्त किए बिना देना थका देता है।

और धीरे-धीरे, आनंद चला जाता है।

कर्तव्य रह जाता है।

पास्टर यहोशू अक्सर इस तरह प्रार्थना करते थे।

तेज़।

केंद्रित।

प्रभावी।

वे विश्वास करते थे कि अनुशासन परमेश्वर का आदर करता है।

लेकिन वे शायद ही कभी आनंद महसूस करते थे।

वे शायद ही कभी शांति महसूस करते थे।

वे शायद ही कभी विश्राम महसूस करते थे।

वे यीशु से प्रेम करते थे।

लेकिन वे नहीं जानते थे कि उनके साथ कैसे बैठना है।

क्योंकि बैठना उन्हें अनुत्पादक लगता था।

यह समय की बर्बादी जैसा लगता था।

लोगों को उनकी ज़रूरत थी।

कलीसिया को उनकी ज़रूरत थी।

परमेश्वर को उनकी ज़रूरत थी।

कम से कम, वे यही विश्वास करते थे।

लेकिन यीशु ने कभी उन्हें मार्था बनने के लिए नहीं कहा।

उन्होंने उन्हें मरियम बनने के लिए बुलाया।

बैठने के लिए।

सुनने के लिए।

आनंद लेने के लिए।

भरोसा करने के लिए।

क्योंकि फल जल्दी करने से नहीं उगता।

यह विश्राम से उगता है।

सेवकाई प्रयास से नहीं बहती।

यह निकटता से बहती है।

जो पास्टर लंबे समय तक टिकते हैं, वे सबसे ज़्यादा काम करने वाले नहीं होते।

वे सबसे ज़्यादा निकट रहने वाले होते हैं।

मरियम ने बेहतर भाग चुना।

सबसे उत्पादक भाग नहीं।

सबसे प्रभावशाली भाग नहीं।

बेहतर भाग।

और वह उससे छीना नहीं जा सकता था।

क्योंकि जो आप उनकी उपस्थिति से प्राप्त करते हैं, उसे काम कभी उत्पन्न नहीं कर सकता।

पास्टर यहोशू जल्द ही यह खोजने वाले थे।

शिक्षा से नहीं।

अनुभव से।

क्योंकि यीशु आज भी अपने सेवकों को बैठने के लिए बुलाते हैं।

और कई अभी भी नहीं जानते कि कैसे।

अध्याय 3: वह दिन जब परमेश्वर ने कहा, रुक जाओ

परमेश्वर बहुत स्पष्ट थे।

छः दिन काम करो।

एक दिन रुक जाओ।

धीमे नहीं पड़ो।

एक साथ कई काम मत करो।

रुक जाओ।

"छः दिन तुम काम करोगे और अपना सारा काम पूरा करोगे, लेकिन सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए सब्त का दिन है। उस दिन तुम कोई काम नहीं करोगे।"
(निर्गमन 20:9–10, ERV)

महत्वपूर्ण लोगों के लिए कोई छूट नहीं।

आत्मिक लोगों के लिए कोई छूट नहीं।

परमेश्वर का काम करने वालों के लिए भी कोई छूट नहीं।

बस रुक जाओ।

यह आज्ञा इसलिए नहीं दी गई क्योंकि परमेश्वर कम काम चाहते थे।

यह इसलिए दी गई क्योंकि परमेश्वर अधिक संबंध चाहते थे।

शुरू से ही, सब्त शक्ति वापस पाने के बारे में नहीं था।

यह स्रोत को याद करने के बारे में था।

यह हर सप्ताह एक स्मरण था कि उनका जीवन उनके प्रयास पर निर्भर नहीं था।

यह उन पर निर्भर था।

लेकिन आज, कई पास्टर चुपचाप इस आज्ञा को तोड़ते हैं, जबकि वे सोचते हैं कि वे इसे मान रहे हैं।

विशेषकर भारत में।

रविवार जल्दी आ जाता है।

कपड़े तैयार।

संदेश तैयार।

फोन पहले से बज रहा है।

दिन जल्दी शुरू होता है और थकान के साथ समाप्त होता है।

प्रचार करना।

प्रार्थना करना।

सलाह देना।

यात्रा करना।

सभा करना।

सुनना।

समस्याएँ सुलझाना।

देना।

देना।

देना।

जब रविवार की रात आती है, कुछ भी नहीं बचता।

शरीर गिर जाता है।

मन बंद हो जाता है।

आत्मा खाली महसूस करती है।

और फिर भी, अंदर कहीं गहराई में, कई लोग कहते हैं, मैंने सब्त रखा।

लेकिन रविवार विश्राम नहीं था।

रविवार काम था।

पवित्र काम।

महत्वपूर्ण काम।

राज्य का काम।

लेकिन काम।

परमेश्वर ने कभी काम को विश्राम नहीं कहा, केवल इसलिए कि वह उनके लिए किया गया था।

काम अभी भी थकाता है।

काम अभी भी लेता है।

काम अभी भी खाली करता है।

यहाँ तक कि यीशु भी इसे समझते थे।

जब उन्होंने लोगों में अपने आप को उंडेल दिया, तो वे अलग हो गए।

वे दूर चले गए।

उन्होंने विश्राम किया।

उन्होंने अपने पिता के साथ रहने के लिए समय सुरक्षित रखा।

आज पास्टर अक्सर महसूस करते हैं कि वे ऐसा नहीं कर सकते।

सोमवार आता है, और चक्र फिर शुरू हो जाता है।

फोन।

ज़रूरतें।

तैयारी।

दबाव।

जिम्मेदारी।

सात दिन देना।

शून्य दिन रुकना।

यह कभी परमेश्वर की योजना नहीं थी।

सब्त किसी विशेष कैलेंडर दिन से जुड़ा नहीं था।

यह एक लय से जुड़ा था।

काम करो।

रुको।

काम करो।

रुको।

पास्टरों के लिए, इसका मतलब अक्सर एक और दिन चुनना होता है।

एक वास्तविक दिन।

एक सुरक्षित दिन।

एक दिन जब संदेश तैयार नहीं किए जाते।

संदेशों का उत्तर नहीं दिया जाता।

समस्याएँ हल नहीं की जातीं।

एक दिन धीरे चलने के लिए।

एक दिन आसानी से हँसने के लिए।

एक दिन जीवनसाथी के साथ बिना जल्दी किए बैठने के लिए।

एक दिन बच्चों को बिना ध्यान भटकाए सुनने के लिए।

एक दिन साँस लेने के लिए।

एक दिन याद करने के लिए कि परमेश्वर अभी भी परमेश्वर हैं, उनके बिना भी मदद के।

इसके लिए साहस चाहिए।

क्योंकि रुकना खतरनाक लगता है।

अगर किसी को मेरी ज़रूरत हो तो?

अगर कुछ गलत हो जाए तो?

अगर कलीसिया को नुकसान हो जाए तो?

लेकिन सब्त इन डर का उत्तर एक गहरी सच्चाई से देता है।

परमेश्वर को अपनी कलीसिया को बनाए रखने के लिए मानव थकान की ज़रूरत नहीं है।

उन्हें कभी नहीं थी।

उन्हें कभी नहीं होगी।

वे स्वयं उसे संभालते हैं।

सब्त हर सप्ताह यह घोषणा करता है।

यह निर्भरता की घोषणा करता है।

यह भरोसे की घोषणा करता है।

यह स्वतंत्रता की घोषणा करता है।

और परमेश्वर यहीं नहीं रुके।

उन्होंने पूरे वर्ष में विश्राम को बना दिया।

इस्राएल के पूरे कैलेंडर में, पर्व बार-बार आते थे।

वे दिन जब काम रुक जाता था।

वे दिन जब उत्पादन रुक जाता था।

वे दिन जब प्रयास समाप्त हो जाता था।

फसह।

पिन्तेकुस्त।

झोपड़ियों का पर्व।

प्रायश्चित का दिन।

ये बाधाएँ नहीं थे।

ये निमंत्रण थे।

याद करने के लिए निमंत्रण।

आनंद मनाने के लिए निमंत्रण।

निकट आने के लिए निमंत्रण।

परमेश्वर ने इन पर्वों को इसलिए नहीं बनाया क्योंकि उन्हें रस्में पसंद थीं।

उन्होंने इन्हें इसलिए बनाया क्योंकि उन्हें अपने लोग प्रिय थे।

वे उनका ध्यान चाहते थे।

वे उनका हृदय चाहते थे।

वे संबंध चाहते थे।

हर पर्व एक कहानी बताता था।

हर पर्व उनके स्वभाव को प्रकट करता था।

हर पर्व उनके लोगों को उनके और निकट लाता था।

लेकिन एक सूक्ष्म खतरा हमेशा रहता था।

लोग पर्व मना सकते थे।

और परमेश्वर को खो सकते थे।

वे काम रोक सकते थे।

और फिर भी विश्राम नहीं कर सकते थे।

वे आज्ञा का पालन कर सकते थे।

और संबंध को खो सकते थे।

आज सेवकाई में भी यही खतरा है।

पास्टर एक दिन की छुट्टी ले सकते हैं।

और फिर भी कलीसिया को अपने मन में उठा सकते हैं।

वे घर बैठ सकते हैं।

और फिर भी संदेशों का उत्तर दे सकते हैं।

वे अपने परिवार के साथ चल सकते हैं।

और फिर भी कहीं और खिंचाव महसूस कर सकते हैं।

शारीरिक रूप से उपस्थित।

भावनात्मक रूप से अनुपस्थित।

तकनीकी रूप से विश्राम करते हुए।

लेकिन वास्तव में कभी नहीं रुकते।

सच्चा सब्त केवल काम रोकना नहीं है।

यह नियंत्रण छोड़ना है।

यह भरोसा करना है कि जब आप काम नहीं कर रहे, तब भी परमेश्वर काम कर रहे हैं।

यही सब्त को पवित्र बनाता है।

यह जिम्मेदारी को वापस वहीं रखता है जहाँ वह होनी चाहिए।

उन पर।

पास्टर यहोशू नहीं जानते थे कि यह कैसे करना है।

उन्होंने वर्षों से पूरा दिन छुट्टी नहीं ली थी।

जब उनका शरीर विश्राम करता था, उनका मन नहीं करता था।

जब उनका फोन शांत होता था, उनके विचार नहीं होते थे।

वे विश्वास करते थे कि विश्राम कमजोरी है।

वे विश्वास करते थे कि रुकना असफलता है।

वे विश्वास करते थे कि परमेश्वर को उनकी लगातार उपलब्धता की ज़रूरत है।

लेकिन परमेश्वर उन्हें कुछ अप्रत्याशित दिखाने वाले थे।

कलीसिया उनके बिना भी बनी रहेगी।

और वे यह खोजेंगे कि परमेश्वर अक्सर अपना सबसे गहरा काम तब करते हैं, जब उनके सेवक अंततः रुक जाते हैं।

अध्याय 4: पहली कलीसिया

पास्टर मंच पर खड़ा था और प्रेम के बारे में प्रचार कर रहा था।

उसकी आवाज़ में सामर्थ था।
उसके शब्दों में दृढ़ विश्वास था।
लोग ध्यान से सुन रहे थे।
कुछ नोट्स ले रहे थे।
कुछ अपनी आँखों से आँसू पोंछ रहे थे।

उसने बलिदान के बारे में बात की।

उसने समर्पण के बारे में बात की।

उसने मसीह के बारे में बात की, जिन्होंने कलीसिया के लिए अपना जीवन दे दिया।

फिर वह घर गया।

उसकी पत्नी बिस्तर के किनारे बैठी थी।

वह उसका इंतज़ार कर रही थी।

वह उससे बात करना चाहती थी।

लेकिन उसने अपना फोन उठा लिया।

उसने लाइट बंद की और चुपचाप लेट गई।

वह फोन पर बात करता रहा।

यह दृश्य संसार भर के शांत घरों में बार-बार दोहराया जाता है।

इसलिए नहीं कि पास्टर परमेश्वर से प्रेम नहीं करता।

इसलिए नहीं कि वह लोगों से प्रेम नहीं करता।

लेकिन इसलिए कि कहीं न कहीं उसने एक बुनियादी बात को गलत समझ लिया।

उसने परमेश्वर के काम को परमेश्वर की आज्ञाकारिता समझ लिया।

परमेश्वर ने कभी पास्टर से नहीं कहा,

"मेरी कलीसिया से वैसे प्रेम करो जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया।"

उन्होंने कहा:

"हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपने आप को दे दिया।"
(इफिसियों 5:25, ERV)

इस आज्ञा में कोई समझौते की जगह नहीं है।

मसीह ने कलीसिया से साधारण रूप से प्रेम नहीं किया।

उन्होंने सुविधा के समय प्रेम नहीं किया।

उन्होंने अपनी बाकी जिम्मेदारियों के बाद प्रेम नहीं किया।

उन्होंने पहले प्रेम किया।

उन्होंने पूरी तरह प्रेम किया।

उन्होंने बलिदान के साथ प्रेम किया।

उन्होंने मृत्यु तक प्रेम किया।

आधा नहीं।

थोड़ा नहीं।

पूरा समर्पण।

उन्होंने सब कुछ दे दिया।

यही मापदंड है।

दूसरे पतियों से तुलना नहीं।

समाज से तुलना नहीं।

मसीह से तुलना।

और मसीह कभी अपनी दुल्हन को अपने ध्यान के लिए प्रतिस्पर्धा करने नहीं देते।

वे कभी नहीं कहते,

"तुम महत्वपूर्ण हो, लेकिन मेरा काम अधिक महत्वपूर्ण है।"

उनका प्रेम ही उनका काम है।

यह एक असहज सच्चाई को प्रकट करता है।

एक पास्टर बड़ी कलीसिया बना सकता है।

वह शक्तिशाली संदेश दे सकता है।

वह हजारों लोगों का नेतृत्व कर सकता है।

लेकिन अगर उसकी पत्नी अकेला महसूस करती है, तो वह मसीह की आज्ञा नहीं मान रहा।

क्योंकि पहला स्थान जहाँ मसीह उसे बलिदान के साथ प्रेम करने को कहते हैं, वह मंच नहीं है।

वह उसका घर है।

कुछ पास्टर कहते हैं,

"पहले परमेश्वर, फिर सेवकाई, फिर परिवार।"

यह आत्मिक लगता है।

यह सही लगता है।

लेकिन यह एक खतरनाक भ्रम छुपाता है।

परमेश्वर अपने आप को इस बात से अलग नहीं करते कि एक पुरुष अपनी पत्नी से कैसे प्रेम करता है।

एक पास्टर यह नहीं कह सकता कि वह परमेश्वर को चुनता है, जबकि वह अपनी पत्नी की उपेक्षा करता है।

क्योंकि अपनी पत्नी से प्रेम करना ही परमेश्वर को चुनना है।

यह सेवकाई से ध्यान भटकाना नहीं है।

यह सेवकाई है।

परमेश्वर का काम घर से शुरू होता है।

पौलुस ने इसे बहुत स्पष्ट किया:

"यदि कोई व्यक्ति अपने घर को संभालना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?"
(1 तीमुथियुस 3:5, ERV)

शायद नहीं।

कठिन होगा नहीं।

योग्य नहीं होगा।

घर का नेतृत्व कलीसिया के नेतृत्व से अलग नहीं है।

यह उसका प्रमाण है।

एक व्यक्ति की सेवकाई मंच पर शुरू नहीं होती।

यह उसके घर के दरवाजे से शुरू होती है।

उसकी पत्नी उसकी बुलाहट में बाधा नहीं है।

वह उसका केंद्र है।

उसके बच्चे रुकावट नहीं हैं।

वे उसके पहले चेले हैं।

फिर भी कई पास्टर कुछ और विश्वास करते हैं।

वे विश्वास करते हैं कि सेवकाई के लिए बलिदान घर से अनुपस्थिति को सही ठहराता है।

वे कहते हैं,

“मेरा परिवार समझता है।”

“वे जानते हैं कि मैं परमेश्वर का काम कर रहा हूँ।”

“वे मजबूत हैं।”

“वे मेरा समर्थन करते हैं।”

कभी-कभी करते हैं।

कभी-कभी नहीं।

कभी-कभी वे अकेले रोते हैं।

कभी-कभी वे अपनी पीड़ा बताना बंद कर देते हैं।

कभी-कभी वे अपने दिल के चारों ओर दीवार बना लेते हैं।

अजनबियों से नहीं।

अपने पति से।

विवाह के अंदर अकेलापन सबसे गहरे दर्दों में से एक है।

सिर्फ शारीरिक उपस्थिति इसे दूर नहीं करती।

एक व्यक्ति उसी कमरे में बैठ सकता है।

फिर भी अनुपस्थित हो सकता है।

उसका शरीर घर में।

उसका ध्यान कहीं और।

उसका फोन उसके हाथ में।

उसका मन कलीसिया में।

उसकी पत्नी उसके पास।

अकेली।

पतरस ने एक चेतावनी दी जिसे कई पास्टर नजरअंदाज करते हैं:

"हे पतियों, अपनी पत्नियों के साथ समझदारी से रहो... ताकि तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।"

(1 पतरस 3:7, ERV)

इसका मतलब है कि एक व्यक्ति का अपनी पत्नी के साथ व्यवहार उसके परमेश्वर के साथ संबंध को प्रभावित करता है।

वास्तव में।

सिर्फ प्रतीकात्मक रूप से नहीं।

वह सार्वजनिक रूप से प्रचार कर सकता है।

वह सार्वजनिक रूप से प्रार्थना कर सकता है।

लेकिन स्वर्ग इस बात पर ध्यान देता है कि वह निजी रूप से उसके साथ कैसा व्यवहार करता है।

परमेश्वर इन दोनों को अलग नहीं करते।

कुछ पास्टर सोचते हैं कि उनकी सेवकाई सूखी क्यों महसूस होती है।

उनकी प्रार्थना कमजोर क्यों महसूस होती है।

उनका आनंद दूर क्यों महसूस होता है।

वे आत्मिक उत्तर खोजते हैं।

परमेश्वर अक्सर संबंधों की ओर संकेत करते हैं।

क्योंकि जहाँ प्रेम की उपेक्षा होती है, वहाँ फल नहीं उगता।

यह बच्चों पर भी लागू होता है।

बच्चे अपने पिता को देखकर सीखते हैं कि परमेश्वर कौन है।

यदि कलीसिया को उसका धैर्य मिलता है, लेकिन बच्चों को उसकी थकान मिलती है, तो वे कुछ सीखते हैं।

यदि अजनबियों को उसका ध्यान मिलता है, लेकिन बच्चों को नहीं, तो वे समझ जाते हैं।

वे शायद कभी कुछ न कहें।

लेकिन वे महसूस करते हैं।

कुछ पास्टर कहते हैं,

"मैं यह अपने परिवार के लिए कर रहा हूँ।"

"मैं उनके भविष्य के लिए कुछ बना रहा हूँ।"

"मैं परमेश्वर की सेवा कर रहा हूँ।"

लेकिन बच्चे प्रेम को संदेशों से नहीं मापते।

वे समय से मापते हैं।

पत्नी सेवकाई की सफलता से प्रेम महसूस नहीं करती।

वह उपस्थिति से प्रेम महसूस करती है।

कोई कलीसिया सदस्य रात में जागकर यह इच्छा नहीं करता कि उसका पास्टर उसके साथ कम समय बिताए और अपने परिवार के साथ अधिक।

लेकिन कई पत्नियाँ ऐसा चाहती हैं।

दर्दनाक सच्चाई यह है:

एक पास्टर संसार जीत सकता है।

और धीरे-धीरे अपना घर खो सकता है।

और परमेश्वर ने कभी उससे ऐसा करने को नहीं कहा।

उपेक्षित संबंधों पर बनी सेवकाई निजी दर्द और सार्वजनिक सफलता बनाती है।

परमेश्वर ने कभी सफलता को इस तरह परिभाषित नहीं किया।

फलदायी सेवकाई विवाह का बलिदान नहीं मांगती।

यह उसकी रक्षा करती है।

कुछ सबसे शक्तिशाली सेवकाई के क्षण कलीसिया में नहीं होते।

वे भोजन की मेज पर होते हैं।

वे शांत सैर में होते हैं।

वे साधारण बातचीत में होते हैं।

जब पत्नी स्वयं को देखा हुआ महसूस करती है।

जब बच्चे स्वयं को मूल्यवान महसूस करते हैं।

जब प्रेम सुरक्षित महसूस होता है।

ये क्षण सेवकाई से प्रतिस्पर्धा नहीं करते।

ये उसे बनाए रखते हैं।

पास्टर यहोशू की पत्नी ने कभी शिकायत नहीं की।

कम से कम ज़ोर से नहीं।

वह उसका दिल जानती थी।

वह उसकी सच्चाई जानती थी।

वह जानती थी कि वह परमेश्वर से प्रेम करता है।

लेकिन कुछ रातों में, वह सोचती थी कि क्या उसके लिए उसके अंदर कुछ बचा है।

परमेश्वर ने उसके आँसू देखे।

और परमेश्वर को परवाह थी।

क्योंकि पास्टर बनने से पहले, वह एक पति था।

और अगुवा बनने से पहले, वह एक व्यक्ति था जिसे एक परिवार सौंपा गया था।

उसकी पहली कलीसिया उसके घर में मिलती थी।

और परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा कि उस कलीसिया की उपेक्षा हो।

अध्याय 5: डाल का रहस्य

भारत की दोपहर की गर्मी में, एक आम का पेड़ आँगन में चुपचाप खड़ा रहता है।

कोई आवाज़ नहीं।

कोई तनाव नहीं।

कोई दिखाई देने वाला प्रयास नहीं।

फिर भी, हर मौसम में फल आता है।

मीठा।

बहुतायत में।

बिना प्रयास के।

किसी ने कभी आम के पेड़ के पास खड़े होकर उसे फल पैदा करने के लिए कराहते नहीं सुना।

वह चिल्लाता नहीं।

वह संघर्ष नहीं करता।

वह बना रहता है।

उसकी जड़ें मिट्टी में रहती हैं।

उसकी डालें तने से जुड़ी रहती हैं।

जीवन स्वाभाविक रूप से बहता है।

और फल आता है।

यीशु ने एक बार इसी सच्चाई की ओर संकेत किया।

"मैं दाखलता हूँ, और तुम डालियाँ हो। जो मुझमें बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल लाता है। क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

(यूहन्ना 15:5, ERV)

उन्होंने यह नहीं कहा,

जो अधिक मेहनत करता है, वह अधिक फल लाता है।

उन्होंने यह नहीं कहा,

जो अधिक बलिदान करता है, वह अधिक फल लाता है।

उन्होंने कहा,

जो बना रहता है।

यह अधिक करने की आज्ञा नहीं थी।

यह जुड़े रहने की आज्ञा थी।

क्योंकि डालियाँ प्रयास से फल नहीं लातीं।

वे संबंध से फल लाती हैं।

दाखलता का जीवन डाली में बहता है।

डाली उसे बनाती नहीं।

डाली उसे प्राप्त करती है।

यह सब कुछ बदल देता है।

क्योंकि आज कई पास्टर ऐसे जीते हैं जैसे फल उनके प्रयास पर निर्भर करता है।

अधिक संदेश।

अधिक सभाएँ।

अधिक यात्रा।

अधिक सलाह।

अधिक गतिविधि।

अधिक बलिदान।

वे विश्वास करते हैं कि फल उनके काम से आता है।

यीशु ने कहा, फल वहाँ से आता है जहाँ वे रहते हैं।

उनमें।

बना रहना मतलब है बने रहना।

ठहरे रहना।

भरोसा करना।

प्राप्त करना।

इसका मतलब है कि सेवकाई संबंध से बहती है, न कि संबंध सेवकाई के बीच में कहीं फिट किया जाता है।

यह उन पास्टरों के लिए लगभग खतरनाक महसूस होता है, जिन्होंने इतने लंबे समय से जिम्मेदारी उठाई है।

अगर मैं प्रयास करना बंद कर दूँ, तो क्या फल आना बंद हो जाएगा?

अगर मैं धीमा हो जाऊँ, तो क्या सेवकाई रुक जाएगी?

यीशु ने इसका स्पष्ट उत्तर दिया।

उनके बिना, कुछ भी नहीं।

कम फल नहीं।

कोई फल नहीं।

इसका मतलब इसका उल्टा भी सच है।

उनके साथ, फल आता है।

इस सच्चाई को इतिहास के कुछ महान मसीही अगुवों ने खोजा।

हडसन टेलर, जिन्होंने इक्यावन वर्षों तक चीन में सेवकाई की, एक समय असहनीय दबाव में थे।

हजारों जीवन उनके नेतृत्व पर निर्भर थे।

पैसा, निर्णय, संकट, और अनगिनत ज़रूरतें उन्हें घेर रही थीं।

उन्होंने अधिक प्रयास किया।

उन्होंने अधिक प्रार्थना की।

उन्होंने अधिक काम किया।

फिर भी, वे थके हुए महसूस करते रहे।

फिर उन्होंने कुछ खोजा जिसने उनका जीवन बदल दिया।

उन्होंने लिखा:

"मैंने देखा कि न केवल यीशु मुझे कभी नहीं छोड़ेंगे, बल्कि मैं उनके शरीर का एक अंग हूँ... दाखलता की डाली चिंता नहीं करती। उसे केवल बने रहना होता है।"

उस क्षण से, उनकी सेवकाई बदल गई।

इसलिए नहीं कि उन्होंने अधिक काम किया।

इसलिए कि उन्होंने अधिक भरोसा किया।

वॉचमैन नी, जिन्होंने एशिया में सेवकाई की और अपने विश्वास के कारण बहुत दुःख सहा, उन्होंने इसे सरल शब्दों में कहा:

"परमेश्वर हमसे फल उत्पन्न करने के लिए नहीं कहते। वे हमसे फल लाने के लिए कहते हैं।"

उत्पन्न करना मानव प्रयास है।

फल लाना परमेश्वर का जीवन है।

यहाँ तक कि मदर टेरेसा, जिन्होंने भारत में दशकों तक गरीबों की सेवा की, उन्होंने अपनी पूरी सेवकाई इसी सच्चाई पर बनाई।

हर सुबह, किसी की सेवा करने से पहले, वे और उनकी बहनें यीशु के साथ घंटों बिताती थीं।

उन्होंने कहा:

"आप जो समय यीशु के साथ बिताते हैं, वही पृथ्वी पर सबसे अच्छा समय है।"

उन्होंने यीशु के साथ समय को सेवकाई की तैयारी नहीं माना।

उन्होंने उसे स्रोत माना।

उसके बिना, काम खाली हो जाता।

क्योंकि बने रहने के बिना सेवकाई आत्मिक कपड़ों में मानव प्रयास बन जाती है।

यह प्रभावशाली दिखता है।

लेकिन यह धीरे-धीरे आत्मा को खाली कर देता है।

यहीं आज भारत में कई पास्टर खड़े हैं।

वे यीशु से प्रेम करते हैं।

वे विश्वासयोग्यता से सेवा करते हैं।

लेकिन वे थके हुए महसूस करते हैं।

केवल शारीरिक रूप से नहीं।

गहराई में।

वे ऐसे बोझ उठाते हैं जिन्हें उठाने के लिए वे कभी बनाए नहीं गए थे।

वे ऐसे फल उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने उनसे कभी नहीं माँगा।

क्योंकि फल डाली की जिम्मेदारी नहीं है।

जुड़े रहना है।

यह पास्टर को उस चीज़ से मुक्त करता है जिसे उठाने के लिए वह कभी बनाया नहीं गया।

परिणामों की जिम्मेदारी।

यीशु ने कभी अपने चेलों से नहीं कहा,

फल पैदा करो।

उन्होंने कहा,

मेरे साथ बने रहो।

क्योंकि जब डाली जुड़ी रहती है, फल स्वाभाविक हो जाता है।

प्रेम स्वाभाविक हो जाता है।

बुद्धि स्वाभाविक हो जाती है।

सामर्थ स्वाभाविक हो जाता है।

शांति स्वाभाविक हो जाती है।

जबरदस्ती नहीं।

बनावटी नहीं।

प्राप्त।

यह पास्टर के परिवार की भी रक्षा करता है।

क्योंकि जो व्यक्ति बना रहता है, उसे सेवकाई उत्पन्न करने के लिए अपने विवाह का बलिदान नहीं देना पड़ता।

वही जीवन जो सेवकाई में फल लाता है, घर में प्रेम लाता है।

वही संबंध जो प्रचार में बुद्धि लाता है, बच्चों के साथ धैर्य लाता है।

वही संबंध जो सार्वजनिक रूप से सामर्थ लाता है, निजी रूप से नम्रता लाता है।

सब कुछ एक ही स्रोत से बहता है।

यीशु।

पास्टर यहोशू ने वर्षों तक फल उत्पन्न करने की कोशिश की।

उन्होंने दबाव उठाया।

उन्होंने जिम्मेदारी उठाई।

उन्होंने डर उठाया।

वे विश्वास करते थे कि सब कुछ उन पर निर्भर है।

उन्होंने कभी पूरी तरह इस सच्चाई को नहीं समझा।

यह उन पर निर्भर नहीं था।

यह यीशु पर निर्भर था।

और यीशु ने उनसे कभी दाखलता उठाने को नहीं कहा।

केवल उसमें बने रहने को कहा।

डाली विश्राम करती है।

दाखलता फल लाती है।

यही फलदायी सेवकाई का रहस्य है।

कठिन काम नहीं।

बड़ा बलिदान नहीं।

गहरा बना रहना।

और जब एक पास्टर अंततः इस पर विश्वास करता है, सब कुछ बदल जाता है।

अध्याय 6: केवल तुम्हारे लिए कभी नहीं था

पास्टर यहोशू का फोन कभी बंद नहीं होता था।

सुबह।

दोपहर।

रात।

प्रश्न।

समस्याएँ।

निवेदन।

“पास्टर, कृपया आकर प्रार्थना करें।”

“पास्टर, कृपया आकर इस विवाद को सुलझाएँ।”

“पास्टर, कृपया आकर मुलाकात करें।”

“पास्टर, कृपया आकर मदद करें।”

वह अपने लोगों से प्रेम करता था।

वह उनके लिए वहाँ रहना चाहता था।

उसे विश्वास था कि यह उसकी जिम्मेदारी है।

आखिरकार, वह उनका पास्टर था।

उनका अगुवा।

उनका चरवाहा।

अगर वह नहीं करेगा, तो कौन करेगा?

इसलिए वह जाता रहा।

बार-बार।

और धीरे-धीरे, बिना जाने, वह कुछ ऐसा उठाने लगा जिसे परमेश्वर ने उससे कभी उठाने को नहीं कहा।

सब कुछ की जिम्मेदारी।

यह बोझ महान लगता है।

यह आत्मिक लगता है।

यह नेतृत्व जैसा लगता है।

लेकिन यह वह आदर्श नहीं है जो यीशु ने दिया।

और यह वह आदर्श नहीं है जो पौलुस ने सिखाया।

इफिसियों अध्याय 4 में, पौलुस ने उस बात का वर्णन किया जिसे अक्सर पाँच प्रकार की सेवकाई कहा जाता है:

"मसीह ने कुछ लोगों को प्रेरित बनाया, कुछ को भविष्यवक्ता, कुछ को सुसमाचार प्रचारक, कुछ को चरवाहे और शिक्षक बनाया।"
(इफिसियों 4:11, ERV)

कई कलीसियाओं ने इस पद को गलत समझा है।

उन्होंने इन भूमिकाओं को अधिकार के पद के रूप में देखा।

सम्मान की उपाधि के रूप में।

महत्व के स्तर के रूप में।

लेकिन पौलुस ने इन्हें इस तरह कभी नहीं बताया।

उन्होंने तुरंत उनका उद्देश्य बताया:

“उन्होंने इन लोगों को इसलिए दिया कि वे परमेश्वर के लोगों को सेवा के काम के लिए तैयार करें, ताकि मसीह का शरीर मजबूत बने।”
(इफिसियों 4:12, ERV)

यह सब कुछ बदल देता है।

इन अगुवों को सेवकाई करने के लिए नहीं दिया गया।

उन्हें दूसरों को सेवकाई के लिए तैयार करने के लिए दिया गया।

लक्ष्य कभी एक व्यक्ति पर निर्भरता नहीं था।

लक्ष्य बढ़ोतरी था।

पास्टर को कलीसिया उठाने के लिए नहीं बुलाया गया।

उसे कलीसिया को तैयार करने के लिए बुलाया गया।

“तैयार करना” इस पद का सबसे महत्वपूर्ण शब्दों में से एक है।

मूल यूनानी भाषा में इसका अर्थ है—ठीक करना, तैयार करना, प्रशिक्षण देना, और पूरी तरह सक्षम बनाना।

इसका उपयोग सामान्य जीवन में शक्तिशाली तरीकों से किया जाता था।

मछुआरे इस शब्द का उपयोग अपने जाल ठीक करने के लिए करते थे।

टूटे हुए स्थान ठीक किए जाते थे।

कमजोर स्थान मजबूत किए जाते थे।

जाल फिर से उपयोगी बन जाता था।

डॉक्टर इस शब्द का उपयोग टूटी हुई हड्डी को ठीक करने के लिए करते थे।

वे उसे सही स्थान पर रखते थे ताकि वह सही तरीके से काम करे।

निर्माता इस शब्द का उपयोग अपने औज़ार तैयार करने के लिए करते थे।

सब कुछ तैयार।

सब कुछ सक्षम।

सब कुछ उपयोगी।

यही पास्टरों को करने के लिए बुलाया गया है।

स्वयं औज़ार बनना नहीं।

औज़ार तैयार करना।

सारा काम करना नहीं।

काम करने वालों को तैयार करना।

हर ज़रूरत पूरी करना नहीं।

लोगों को तैयार करना।

यह हमेशा परमेश्वर की योजना थी।

क्योंकि कलीसिया कभी एक व्यक्ति पर निर्भर रहने के लिए नहीं बनाई गई थी।

यह हर व्यक्ति के द्वारा बढ़ने के लिए बनाई गई थी।

जब पास्टर सब कुछ करने की कोशिश करते हैं, तो एक खतरनाक बात होती है।

कलीसिया कमजोर रहती है।

लोग निर्भर रहते हैं।

विकास सीमित रहता है।

क्योंकि पास्टर एक रुकावट बन जाता है।

सब उसका इंतज़ार करते हैं।

सब उस पर निर्भर होते हैं।

सबको उसकी ज़रूरत होती है।

लेकिन यह कभी लक्ष्य नहीं था।

पौलुस ने लक्ष्य स्पष्ट बताया:

"जब तक हम सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एक न हो जाएँ, और आत्मिक रूप से परिपक्व न हो जाएँ।"
(इफिसियों 4:13, ERV)

परमेश्वर परिपक्व विश्वासियों को चाहते हैं।

हमेशा निर्भर रहने वालों को नहीं।

चेले।

दर्शक नहीं।

भाग लेने वाले।

सिर्फ देखने वाले नहीं।

भारत में, इस सच्चाई की बहुत आवश्यकता है।

कई पास्टर असंभव अपेक्षाएँ उठाते हैं।

वे विश्वास करते हैं कि उन्हें हर समस्या हल करनी है।

हर प्रश्न का उत्तर देना है।

हर ज़रूरत पूरी करनी है।

हर जगह होना है।

सब कुछ जानना है।

सब कुछ करना है।

लेकिन कोई भी मनुष्य इसके लिए नहीं बनाया गया।

मूसा भी नहीं।

निर्गमन 18 में, मूसा पूरे दिन लोगों की समस्याएँ सुनते थे।

सुबह से शाम तक।

उनके ससुर ने यह देखा और कहा:

"तुम जो कर रहे हो, वह अच्छा नहीं है।"
(निर्गमन 18:17, ERV)

अप्रभावी नहीं।

गलत नहीं।

अच्छा नहीं।

"तुम और ये लोग निश्चित रूप से थक जाओगे।"
(निर्गमन 18:18, ERV)

थकावट कोई नई बात नहीं है।

यह हजारों साल पहले भी थी।

और परमेश्वर का समाधान सरल था।

जिम्मेदारी बाँटो।

अगुवों को उठाओ।

दूसरों को प्रशिक्षण दो।

दूसरों पर भरोसा करो।

दूसरों को तैयार करो।

जब मूसा ने ऐसा किया, सब कुछ बदल गया।

लोगों की देखभाल हुई।

और मूसा बचे रहे।

यह आज भी परमेश्वर की योजना है।

पास्टर सेवकाई नहीं है।

पास्टर सेवकाई को तैयार करता है।

इसके लिए नम्रता चाहिए।

क्योंकि सब कुछ करना महत्वपूर्ण लगता है।

दूसरों को तैयार करना धीमा लगता है।

अव्यवस्थित लगता है।

जोखिम भरा लगता है।

दूसरे लोग पूरी तरह सही नहीं करेंगे।

वे गलतियाँ करेंगे।

वे असफलताओं से सीखेंगे।

लेकिन इसी तरह चेले बढ़ते हैं।

यीशु ने स्वयं इसी आदर्श का पालन किया।

उन्होंने इस्राएल के हर व्यक्ति को चंगा नहीं किया।

उन्होंने बारह लोगों को प्रशिक्षित किया।

उन्होंने उन्हें तैयार किया।

उन्होंने उन्हें भेजा।

उन्होंने उन पर भरोसा किया।

और उनके द्वारा संसार बदल गया।

पास्टर यहोशू ने इसे कभी पूरी तरह नहीं समझा था।

उन्हें लगता था कि लोगों के लिए आवश्यक होना विश्वासयोग्यता है।

उन्हें लगता था कि सब कुछ करना आज्ञाकारिता है।

उन्हें यह नहीं पता था कि वे दूसरों की बढ़ोतरी रोक रहे थे।

क्योंकि जब पास्टर सब कुछ करता है, कलीसिया कुछ नहीं सीखती।

लेकिन जब पास्टर तैयार करता है, कलीसिया जीवित हो जाती है।

सेवकाई बढ़ती है।

बोझ कम होता है।

आनंद वापस आता है।

क्योंकि पास्टर अंततः अपनी सच्ची बुलाहट में प्रवेश करता है।

सब कुछ करने वाला नहीं।

सबको तैयार करने वाला।

यह शुरुआत से ही परमेश्वर की बुद्धि थी।

और यह आज भी काम करती है।

अध्याय 7: वह गुफा जिसने अगुवे बनाए

पास्टर यहोशू यह बात कई बार कहते थे।

“अगर हमारे पास अगुवे होते, तो मैं उन्हें प्रशिक्षण देता।”

वे यह बात घमंड से नहीं कहते थे।

वे यह बात निराशा से कहते थे।

वे अपनी छोटी कलीसिया को देखते थे और साधारण लोगों को देखते थे।

एक किसान जो ठीक से पढ़ नहीं सकता था।

एक जवान आदमी जो शराब की समस्या से जूझ चुका था।

एक महिला जिसका परिवार हमेशा लड़ता रहता था।

एक मजदूर जो कर्ज में दबा हुआ था।

विश्वासयोग्य लोग।

सच्चे लोग।

लेकिन अगुवे नहीं।

कम से कम, अभी नहीं।

इसलिए यहोशू ने वही किया जो कई पास्टर करते हैं।

उन्होंने जिम्मेदारी खुद उठा ली।

वे इंतज़ार करते रहे किसी योग्य व्यक्ति का।

किसी मजबूत व्यक्ति का।

किसी परिपक्व व्यक्ति का।

किसी तैयार व्यक्ति का।

वे यह नहीं समझते थे कि वे ऐसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे थे जिसे परमेश्वर बहुत कम भेजते हैं।

क्योंकि परमेश्वर शायद ही कभी तैयार लोगों को बुलाते हैं।

वे बुलाए हुए लोगों को तैयार करते हैं।

बाइबल की सबसे महान अगुवाई की कहानियों में से एक एक गुफा के अंदर शुरू हुई।

दाऊद ने अभी-अभी सब कुछ खो दिया था।

उसका पद।

उसकी सुरक्षा।

उसकी प्रतिष्ठा।

राजा शाऊल उसका पीछा कर रहा था।

वह अपनी जान बचाने के लिए भागा।

वह अदुल्लाम की गुफा में छिप गया।

अकेला।

कम से कम, शुरू में।

फिर कुछ अप्रत्याशित हुआ।

लोग आने लगे।

सबसे अच्छे लोग नहीं।

सबसे मजबूत लोग नहीं।

सबसे प्रभावशाली लोग नहीं।

बाइबल उन्हें स्पष्ट रूप से बताती है:

"वे सब जो संकट में थे, या कर्ज में थे, या मन से दुखी थे, उसके पास इकट्ठे हो गए।"

(1 शमूएल 22:2, ERV)

यह कोई विशेष समूह नहीं था।

यह टूटे हुए लोगों का समूह था।

संकट में पड़े लोग।

जीवन से दबे हुए लोग।

कर्ज में दबे हुए लोग।

कड़वाहट से भरे हुए लोग।

ये अगुवे नहीं थे।

ये समाज से अलग किए गए लोग थे।

अगर आज का कोई पास्टर इस समूह को देखता, तो शायद कहता,

"ये तैयार नहीं हैं।"

"इन्हें और समय चाहिए।"

"इन्हें और परिपक्वता चाहिए।"

"इन्हें और चंगाई चाहिए।"

दाऊद ने कुछ अलग किया।

उन्होंने उन्हें स्वीकार किया।

वे उनके साथ रहे।

उन्होंने उनका नेतृत्व किया।

उन्होंने उन्हें प्रशिक्षण दिया।

उन्होंने अपना जीवन उनके साथ बाँटा।

उन्होंने उन्हें परमेश्वर पर भरोसा करते देखा।

उन्होंने उन्हें गुफाओं में आराधना करते देखा।

उन्होंने उन्हें बदला लेने से इंकार करते देखा।

उन्होंने उन्हें सब कुछ टूट जाने पर भी परमेश्वर पर निर्भर रहते देखा।

उन्होंने अगुवाई कक्षा में नहीं सीखी।

उन्होंने अगुवाई उनके साथ चलकर सीखी।

और कुछ अद्भुत हुआ।

वे बदल गए।

धीरे-धीरे।

शांत रूप से।

सामर्थ के साथ।

वर्षों बाद, बाइबल उन्हें कर्ज में दबे हुए लोग नहीं कहती।

उन्हें पराक्रमी वीर कहती है।

ये वही टूटे हुए, निराश लोग साहसी योद्धा बन गए।

एक ने अकेले ही पूरे सेना को हरा दिया।

दूसरे ने एक खेत की रक्षा की जब बाकी सब भाग गए।

एक ने बर्फ वाले दिन एक गड्ढे में शेर को मार डाला।

वे निडर बन गए।

मजबूत बन गए।

विश्वासयोग्य बन गए।

इसलिए नहीं कि वे ऐसे शुरू हुए थे।

इसलिए कि उन्हें ऐसा प्रशिक्षित किया गया।

क्योंकि किसी ने उन पर विश्वास किया, इससे पहले कि वे खुद पर विश्वास करते।

क्योंकि किसी ने उन्हें अवसर दिया, इससे पहले कि वे उसके योग्य थे।

क्योंकि किसी ने देखा कि परमेश्वर उन्हें क्या बना सकते हैं।

इसी तरह परमेश्वर अगुवे बनाते हैं।

सबसे मजबूत को ढूंढकर नहीं।

तैयार लोगों को बदलकर।

यह सच्चाई बदल देती है कि पास्टर अपने लोगों को कैसे देखते हैं।

पीछे बैठा शांत व्यक्ति एक शक्तिशाली शिक्षक बन सकता है।

आज संघर्ष करने वाली महिला कल कई लोगों को चेला बना सकती है।

प्रश्न पूछने वाला नया विश्वासयोग्य एक दिन कलीसियाएँ लगा सकता है।

परमेश्वर साधारण लोगों के अंदर महानता छिपाते हैं।

पास्टर का काम यह तय करना नहीं है कि कौन योग्य है।

उसका काम सबको बढ़ने के लिए तैयार करना है।

पौलुस ने स्पष्ट कहा:

"परमेश्वर के लोगों को सेवा के काम के लिए तैयार करना।"
(इफिसियों 4:12, ERV)

विशेष लोगों को नहीं।

परिपक्व लोगों को नहीं।

संतों को।

सबको।

क्योंकि हर विश्वासयोग्य की बुलाहट है।

हर विश्वासयोग्य का उद्देश्य है।

हर विश्वासयोग्य को परमेश्वर ने अच्छे कामों के लिए तैयार किया है।

पवित्रशास्त्र कहता है:

"हम परमेश्वर की रचना हैं, जिन्हें मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए बनाया गया है, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया।"
(इफिसियों 2:10, ERV)

पहले से तैयार किया।

इसका मतलब है कि परमेश्वर ने पहले ही उनका उद्देश्य तय किया है।

पास्टर उन्हें इसे खोजने में मदद करता है।

इसके लिए धैर्य चाहिए।

क्योंकि लोग धीरे बढ़ते हैं।

इसके लिए भरोसा चाहिए।

क्योंकि लोग गलतियाँ करते हैं।

इसके लिए नम्रता चाहिए।

क्योंकि लोग एक दिन अपने शिक्षक से आगे बढ़ सकते हैं।

लेकिन यही सफलता है।

असफलता नहीं।

यीशु ने भी यही तरीका अपनाया।

उन्होंने विद्वानों को नहीं चुना।

उन्होंने मछुआरों को चुना।

उन्होंने धार्मिक विशेषज्ञों को नहीं चुना।

उन्होंने साधारण लोगों को चुना।

उन्होंने उन्हें गलत समझा।

उन्होंने उन पर संदेह किया।

उन्होंने उन्हें असफल किया।

एक ने उनका इनकार किया।

सबने उन्हें छोड़ दिया।

फिर भी यीशु उनके साथ रहे।

उन्होंने उन्हें सिखाया।

उन्होंने उन्हें फिर से स्थापित किया।

और वही लोग संसार बदल गए।

क्योंकि यीशु ने देखा कि वे क्या बन सकते हैं।

न कि केवल वे क्या थे।

पास्टर यहोशू ने अपने लोगों को अलग तरीके से देखना शुरू किया।

बोझ के रूप में नहीं।

निराशा के रूप में नहीं।

अयोग्य के रूप में नहीं।

बल्कि भविष्य के अगुवों के रूप में।

इंतज़ार करते हुए।

बढ़ते हुए।

बनते हुए।

उन्होंने कुछ ऐसा समझा जिसने उनकी सेवकाई बदल दी।

कलीसिया को बेहतर लोगों की ज़रूरत नहीं थी।

उसे बेहतर प्रशिक्षण की ज़रूरत थी।

अदुल्लाम की गुफा आज भी मौजूद है।

स्थान के रूप में नहीं।

एक प्रक्रिया के रूप में।

एक स्थान जहाँ टूटे हुए लोग मजबूत बनते हैं।

जहाँ साधारण लोग अगुवे बनते हैं।

जहाँ विश्वासयोग्य पास्टर अपूर्ण लोगों में निवेश करते हैं।

और परमेश्वर को असंभव करते हुए देखते हैं।

अध्याय 8: खतरनाक सिंहासन

पास्टर यहोशू ने कभी यह बात ज़ोर से नहीं कही।

वे कभी कहते भी नहीं।

लेकिन अंदर गहराई में, उन्हें ज़रूरी होना अच्छा लगता था।

उन्हें अच्छा लगता था कि लोग सबसे पहले उन्हें बुलाते थे।

उन्हें अच्छा लगता था कि उनके पास उत्तर होते थे।

उन्हें अच्छा लगता था जब वे किसी सभा में जाते थे और लोग सम्मान में खड़े हो जाते थे।

उन्हें यह शब्द सुनना अच्छा लगता था,

"पास्टर, केवल आप ही मदद कर सकते हैं।"

इससे उन्हें महत्वपूर्ण महसूस होता था।

मूल्यवान।

ज़रूरी।

इससे उन्हें एक ऐसा उद्देश्य महसूस होता था, जैसा और कुछ नहीं देता था।

हर फोन कॉल इसे पक्का करता था।

हर निवेदन इसे मजबूत करता था।

हर संकट उन्हें याद दिलाता था,

उन्हें मेरी ज़रूरत है।

शुरू में, यह प्रेम जैसा लगता था।

यह सम्मान जैसा लगता था।

यह फल जैसा लगता था।

लेकिन चुपचाप, कुछ और जड़ पकड़ चुका था।

कुछ बहुत अधिक खतरनाक।

वे एक ऐसे सिंहासन पर बैठने लगे थे, जिसे परमेश्वर ने उनके लिए कभी नहीं बनाया।

कोई भौतिक सिंहासन नहीं।

एक मानसिक सिंहासन।

उद्धारकर्ता बनने का सिंहासन।

यह सेवकाई के सबसे सूक्ष्म प्रलोभनों में से एक है।

पैसा नहीं।

अनैतिकता नहीं।

महत्व।

मनुष्य का हृदय महत्व चाहता है।

वह चाहता है कि उसका जीवन मायने रखे।

वह चाहता है कि उसे देखा जाए।

वह चाहता है कि उसकी ज़रूरत हो।

सेवकाई इस इच्छा को पूरा करने के अनगिनत अवसर देती है।

लोग सुनते हैं।

लोग निर्भर होते हैं।

लोग प्रशंसा करते हैं।

लोग धन्यवाद देते हैं।

लोग सम्मान करते हैं।

और हर बार आत्मा के अंदर कुछ महसूस होता है।

भावनात्मक इनाम।

स्वीकृति।

पहचान।

मनोवैज्ञानिक इसे सुदृढ़ीकरण कहते हैं।

जब कोई व्यवहार भावनात्मक इनाम देता है, तो मन उसे फिर से चाहता है।

चुपचाप।

सामर्थ के साथ।

पास्टर को ज़रूरी होना ज़रूरी लगने लगता है।

वह निर्भरता पर निर्भर होने लगता है।

वह अपने उत्तर होने में अपनी पहचान ढूंढने लगता है।

बिना जाने, वह धीरे-धीरे अपनी सेवकाई के भावनात्मक केंद्र में यीशु की जगह लेने लगता है।

धर्मशास्त्र में यीशु उद्धारकर्ता रहते हैं।

व्यवहार में पास्टर उद्धारकर्ता बन जाता है।

वह यह कहता नहीं।

लेकिन वह ऐसा जीता है।

वह वह व्यक्ति बन जाता है जिसके पास सबको आना है।

जिसे सबको पूछना है।

जिसे सबको समाधान करना है।

और यह अच्छा लगता है।

बहुत अच्छा।

अकेले होने से बेहतर।

अनदेखा होने से बेहतर।

साधारण होने से बेहतर।

यही कारण है कि कुछ पास्टर दूसरों को तैयार करने में संघर्ष करते हैं।

तैयार करना निर्भरता कम करता है।

तैयार करना जिम्मेदारी बाँटता है।

तैयार करना विशेष स्थान को हटाता है।

तैयार करना मतलब लोग अब उसी तरह उस पर निर्भर नहीं रहेंगे।

और अंदर कुछ इसका विरोध करता है।

क्योंकि अकेला होना शक्तिशाली लगता है।

यह सुरक्षित लगता है।

यह महत्वपूर्ण लगता है।

लेकिन यह झूठ पर बना है।

क्योंकि केवल एक उद्धारकर्ता है।

केवल एक मसीह।

केवल एक अपरिहार्य अगुवा।

यीशु।

जब पास्टर इस स्थान को लेते हैं, भले ही भावनात्मक रूप से, कलीसिया प्रभावित होती है।

विकास धीमा हो जाता है।

लोग अपरिपक्व रहते हैं।

अगुवे नहीं उठते।

क्योंकि हर कोई एक ही बात सीखता है:

हमें पास्टर की ज़रूरत है।

सच्चाई के बजाय:

हमें मसीह की ज़रूरत है।

यह एक कमजोर कलीसिया बनाता है।

एक निर्भर कलीसिया।

एक सीमित कलीसिया।

यह एक कमजोर पास्टर भी बनाता है।

क्योंकि अब उसकी पहचान उसके महत्व पर निर्भर है।

अगर कम लोग फोन करें, तो वह असुरक्षित महसूस करता है।

अगर कोई और सफल हो, तो वह खतरा महसूस करता है।

अगर दूसरे बढ़ें, तो वह स्वयं को बदला जा सकने वाला महसूस करता है।

यह छिपा हुआ डर बनाता है।

छिपा हुआ दबाव।

छिपी हुई थकान।

वह रुक नहीं सकता।

क्योंकि रुकना गायब होने जैसा लगता है।

यह सेवकाई नहीं है।

यह लत है।

महत्व की लत।

ज़रूरी होने की लत।

केंद्र बनने की लत।

यीशु ने कभी इस तरह अगुवाई नहीं की।

भीड़ हर जगह उनका पीछा करती थी।

हजारों लोगों को उनकी ज़रूरत थी।

फिर भी वे बार-बार अलग हो जाते थे।

वे दूर चले जाते थे।

वे विश्राम करते थे।

वे दूसरों को सेवा करने देते थे।

उन्होंने कभी अपनी पहचान ज़रूरी होने पर नहीं बनाई।

उन्होंने अपनी पहचान पिता के प्रेम पर बनाई।

इसने उन्हें स्वतंत्र किया।

इसने उन्हें नम्र रखा।

इसने उन्हें स्वस्थ रखा।

इसने उनकी सेवकाई को शुद्ध रखा।

सच्चा आत्मिक अधिकार अपने स्थान की रक्षा नहीं करता।

वह दूसरों को सामर्थ देता है।

घमंड नियंत्रण पकड़ता है।

नम्रता उसे छोड़ देती है।

दर्दनाक सच्चाई यह है:

एक व्यक्ति की सेवकाई अक्सर एक व्यक्ति के अहंकार को प्रकट करती है।

हमेशा सार्वजनिक रूप से नहीं।

लेकिन निजी रूप से।

सच्ची नीयत के नीचे छिपा हुआ।

सच्चे प्रेम के नीचे छिपा हुआ।

सच्चे बलिदान के नीचे छिपा हुआ।

लेकिन फिर भी मौजूद।

फिर भी खतरनाक।

फिर भी नुकसानदायक।

क्योंकि घमंड हमेशा खुद को जिम्मेदारी के रूप में छुपाता है।

वह कहता है,

"अगर मैं नहीं करूँगा, तो यह नहीं होगा।"

वह कहता है,

"उन्हें मेरी ज़रूरत है।"

वह कहता है,

"मैं सेवकाई की रक्षा कर रहा हूँ।"

लेकिन परमेश्वर ने कभी अपनी कलीसिया को एक व्यक्ति पर निर्भर रहने के लिए नहीं बनाया।

पौलुस ने स्पष्ट कहा:

"न तो वह जो बोता है कुछ है, और न वह जो पानी देता है। केवल परमेश्वर महत्वपूर्ण है, जो बढ़ाता है।"

(1 कुरिन्थियों 3:7, ERV)

कुछ भी नहीं।

यह पास्टर को एक भारी बोझ से मुक्त करता है।

वह स्रोत नहीं है।

वह उद्धारकर्ता नहीं है।

वह उत्तर नहीं है।

वह एक सेवक है।

न अधिक।

न कम।

पास्टर यहोशू ने इसे अपने अंदर देखना शुरू किया।

एक साथ नहीं।

धीरे-धीरे।

दर्द के साथ।

ईमानदारी से।

उन्होंने समझा कि उनकी कुछ थकान उस भूमिका से आई थी जो परमेश्वर ने उन्हें कभी नहीं दी।

उन्होंने समझा कि उनका कुछ अधिक काम ज़रूरी महसूस करने की आवश्यकता से आया।

उन्होंने समझा कि दूसरों को तैयार करने में उनका कुछ विरोध डर से आया।

कम महत्वपूर्ण होने का डर।

लेकिन कुछ अप्रत्याशित हुआ जब उन्होंने नियंत्रण छोड़ना शुरू किया।

कलीसिया नहीं गिरी।

वह बढ़ी।

दूसरे आगे आए।

दूसरों ने अपनी बुलाहट खोजी।

दूसरों ने जिम्मेदारी उठाई।

और यहोशू ने कुछ बेहतर खोजा, ज़रूरी होने से बेहतर।

स्वतंत्र होना।

अपने परिवार से प्रेम करने के लिए स्वतंत्र।

विश्राम करने के लिए स्वतंत्र।

परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए स्वतंत्र।

सिंहासन से उतरने के लिए स्वतंत्र।

क्योंकि वह कभी उनका सिंहासन था ही नहीं।

अध्याय 9: जब बोझ अंततः उतर गया

पास्टर यहोशू अपने घर के पास एक नीम के पेड़ के नीचे बैठे थे।

कई वर्षों में पहली बार, उनका फोन घर के अंदर पड़ा था।

शांत।

अछूता।

उनका बेटा उनके पास बैठा था, एक लकड़ी से मिट्टी में आकृतियाँ बना रहा था।

उनकी पत्नी दरवाजे के पास खड़ी होकर उन दोनों को देख रही थी।

कोई उन्हें जल्दी नहीं कर रहा था।

कोई उन्हें खींचकर नहीं ले जा रहा था।

किसी को उनकी ज़रूरत नहीं थी।

और अजीब बात यह थी कि पहली बार, उन्हें डर नहीं लग रहा था।

उन्हें स्वतंत्रता महसूस हो रही थी।

कई वर्षों तक, उन्हें विश्वास था कि सब कुछ उन पर निर्भर है।

अब वे बेहतर जानते थे।

सब कुछ हमेशा यीशु पर निर्भर था।

यही वह पाठ था जो परमेश्वर उन्हें सिखा रहे थे।

एक ही घटना के द्वारा नहीं।

कई घटनाओं के द्वारा।

सब्त के वर्ष के द्वारा, जिसने दिखाया कि परमेश्वर मानव प्रयास के बिना भी प्रदान कर सकते हैं।

मरियम के द्वारा, जिसने दिखाया कि यीशु के साथ बैठना, चिंता के साथ उनकी सेवा करने से अधिक महत्वपूर्ण है।

सब्त के दिन के द्वारा, जिसने उन्हें याद दिलाया कि रुकना असफलता नहीं, विश्वास है।

उनकी पत्नी के आँसुओं के द्वारा, जिसने दिखाया कि उनकी पहली सेवकाई उनके घर में थी।

दाखलता और डालियों के द्वारा, जिसने दिखाया कि फल प्रयास से नहीं, बने रहने से आता है।

तैयार करने की आज्ञा के द्वारा, जिसने उन्हें सब कुछ स्वयं करने से मुक्त किया।

अदुल्लाम की गुफा के द्वारा, जिसने सिखाया कि अगुवे खोजे नहीं जाते, बनाए जाते हैं।

और उनके अपने हृदय के शांत प्रकाशन के द्वारा, जिसने दिखाया कि घमंड कितनी आसानी से जिम्मेदारी के रूप में छिप जाता है।

हर पाठ ने उस भारी बोझ से एक पत्थर हटा दिया, जिसे वे उठाए हुए थे।

जब तक कि अंत में, बोझ उतर गया।

यही एक स्वस्थ कलीसिया की पहचान है।

ऐसी कलीसिया नहीं जहाँ पास्टर सब कुछ करता है।

ऐसी कलीसिया जहाँ यीशु सब कुछ करते हैं।

अपने लोगों के द्वारा।

एक स्वस्थ कलीसिया में, पास्टर अकेला खड़ा नहीं होता।

वह लोगों के बीच खड़ा होता है।

वह तैयार करता है।

वह प्रशिक्षण देता है।

वह छोड़ता है।

वह भरोसा करता है।

वह समझता है कि उसकी भूमिका सेवकाई उठाना नहीं है।

सेवकों को तैयार करना है।

लोग एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं।

वे एक-दूसरे की सेवा करते हैं।

वे एक-दूसरे की देखभाल करते हैं।

वे एक साथ बढ़ते हैं।

वे एक व्यक्ति पर निर्भर नहीं होते।

वे एक उद्धारकर्ता पर निर्भर होते हैं।

इससे सामर्थ आता है।

इससे परिपक्वता आती है।

इससे आनंद आता है।

क्योंकि कलीसिया जीवित हो जाती है।

दर्शकों के रूप में नहीं।

भाग लेने वालों के रूप में।

पास्टर अब थकान में नहीं जीता।

वह जुड़े रहने में जीता है।

वह यीशु के साथ समय बिताता है, बिना जल्दी किए।

कर्तव्य के रूप में नहीं।

आनंद के रूप में।

वह घर जाता है बिना सबकी समस्याओं का बोझ उठाए।

वह अपनी पत्नी के साथ बिना ध्यान भटकाए बैठता है।

वह अपने बच्चों के साथ बिना जल्दी के हँसता है।

अब उसका परिवार कलीसिया के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करता।

वे उस जीवन का हिस्सा बन जाते हैं जिसे परमेश्वर बना रहे हैं।

उसकी पत्नी अब अकेली महसूस करते हुए नहीं सोती।

वह चुनी हुई महसूस करती है।

उसके बच्चे अब दूसरे स्थान पर नहीं महसूस करते।

वे देखे हुए महसूस करते हैं।

उसका विवाह गहरा होता है।

उसका घर मजबूत होता है।

और उसकी सेवकाई स्वस्थ होती है।

छोटी नहीं।

मजबूत।

क्योंकि जो स्वाभाविक रूप से बढ़ता है, वह हमेशा उस चीज़ से अधिक मजबूत होता है जिसे मजबूर किया जाता है।

कलीसिया अब उसकी सामर्थ के चारों ओर नहीं घूमती।

वह मसीह की सामर्थ से बहती है।

यह सब कुछ बदल देता है।

पास्टर कुछ ऐसा अनुभव करना शुरू करता है जिसे कई लोग भूल चुके हैं।

आनंद।

सफलता का आनंद नहीं।

स्वतंत्रता का आनंद।

दबाव से स्वतंत्रता।

दिखावा करने से स्वतंत्रता।

उस बोझ से स्वतंत्रता जो कभी उसका था ही नहीं।

उद्धारकर्ता बनने से स्वतंत्रता।

वह वही बन जाता है, जो परमेश्वर ने हमेशा चाहा था।

एक डाली।

जुड़ी हुई।

प्राप्त करती हुई।

जीवित।

और फल आता है।

इसलिए नहीं कि वह उसे मजबूर करता है।

इसलिए कि परमेश्वर उसे उत्पन्न करते हैं।

यही परमेश्वर की योजना है।

अंतहीन प्रयास नहीं।

अंतहीन थकान नहीं।

अंतहीन दबाव नहीं।

संबंध।

भरोसा।

विश्राम।

तैयार करना।

प्रेम।

यही वह कलीसिया है जिसे यीशु बना रहे हैं।

और जब पास्टर इस योजना में चलते हैं, सब आसानी से साँस लेते हैं।

पास्टर।

परिवार।

कलीसिया।

क्योंकि बोझ अंततः वहीं टिक जाता है, जहाँ वह हमेशा से था।

उन पर।

और वे उसे अच्छी तरह उठाते हैं।

परिशिष्ट A

आप वह समय नहीं खोते जो आप निवेश करते हैं

इस पुस्तक ने पवित्रशास्त्र पर ध्यान केंद्रित किया है।

विश्राम पर।

बने रहने पर।

परिवार पर।

दूसरों को तैयार करने पर।

और स्वयं को थका देने के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करने पर।

लेकिन एक और बात है जिसका उल्लेख करना महत्वपूर्ण है।

धर्मशास्त्र से नहीं।

जीवन से।

अवलोकन से।

आँकड़ों से।

और उस तरीके से जिससे परमेश्वर ने मानव शरीर को बनाया है।

क्योंकि विज्ञान भी चुपचाप उसी बात की पुष्टि करता है जो पवित्रशास्त्र पहले से कहता आया है।

जब आप धीमे होते हैं, तो आप समय नहीं खोते।

आप उसे प्राप्त करते हैं।

वह चलना जो समय वापस देता है

शोधकर्ताओं ने उन लोगों का अध्ययन किया है जो नियमित रूप से चलते हैं, विशेषकर वे जो प्रकृति में चलते हैं।

बिना जल्दी किए।

बिना एक साथ कई काम किए।

बिना फोन पर बात किए।

बस चलते हुए।

साँस लेते हुए।

देखते हुए।

सोचते हुए।

प्रार्थना करते हुए।

जीते हुए।

एक सच्चाई बार-बार सामने आई:

जो लोग प्रतिदिन साठ से नब्बे मिनट चलते हैं, वे अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

सिर्फ कुछ सप्ताह नहीं।

वर्षों अधिक।

उन्हें हृदय रोग कम होते हैं।

तनाव कम होता है।

निराशा कम होती है।

चिंता कम होती है।

स्मृति-भ्रंश कम होता है।

उनका शरीर बेहतर कार्य करता है।

उनका मन अधिक स्पष्ट रहता है।

उनकी ऊर्जा अधिक रहती है।

उनकी नींद बेहतर होती है।

उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है।

लेकिन सबसे आश्चर्यजनक बात यह है:

यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन नब्बे मिनट चलता है, तो ऐसा लगता है जैसे वह समय खो रहा है।

नब्बे मिनट काम नहीं कर रहा।

नब्बे मिनट उत्पादन नहीं कर रहा।

नब्बे मिनट संदेशों का उत्तर नहीं दे रहा।

नब्बे मिनट सेवकाई को आगे नहीं बढ़ा रहा।

लेकिन जीवन भर में, वह चलने में लगाए समय से अधिक वर्ष प्राप्त करता है।

दूसरे शब्दों में, निवेश किया गया समय कई गुना होकर वापस आता है।

वह खोता नहीं।

वह उसे वापस पाता है।

और अधिक।

परमेश्वर ने मानव शरीर को इस तरह बनाया है कि वह चलने से पुनर्स्थापित होता है।

विशेषकर उनकी सृष्टि में।

खुले आकाश के नीचे।

पेड़ों के पास।

शांत रास्तों पर।

भारत में कई पास्टर लगातार दबाव में जीते हैं।

लगातार शोर।

लगातार जल्दी।

लेकिन बाहर निकलकर धीरे चलना एक पवित्र स्थान बन सकता है।

केवल व्यायाम नहीं।

संगति।

परमेश्वर के साथ चलना।

जैसे आदम वाटिका में परमेश्वर के साथ चला।

जैसे यीशु गाँव-गाँव चले।

जैसे इतिहास में अनगिनत विश्वासियों ने किया।

कोई संदेश की तैयारी नहीं।

कोई फोन नहीं।

कोई जल्दी नहीं।

केवल उपस्थिति।

केवल संबंध।

और अंत में, यह जीवन को छोटा नहीं करता।

यह उसे बढ़ाता है।

वह विवाह जो जीवन के वर्ष बढ़ाता है

एक और सच्चाई विभिन्न संस्कृतियों और देशों के अध्ययन में दिखाई देती है।

जो लोग सुखी विवाह में रहते हैं, वे अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

सिर्फ थोड़ा अधिक नहीं।

बहुत अधिक।

उन्हें बीमारी कम होती है।

निराशा कम होती है।

अकेलापन कम होता है।

तनाव कम होता है।

उनका हृदय अधिक स्वस्थ रहता है।

उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है।

उनकी भावनात्मक स्थिरता अधिक होती है।

उनकी सहन-शक्ति अधिक होती है।

एक प्रेमपूर्ण विवाह शरीर की रक्षा करता है।

मन की रक्षा करता है।

आत्मा की रक्षा करता है।

लेकिन केवल विवाहित होना पर्याप्त नहीं है।

प्रेम महसूस करना आवश्यक है।

जुड़ाव महसूस करना आवश्यक है।

मूल्यवान महसूस करना आवश्यक है।

इसके लिए समय चाहिए।

बातचीत चाहिए।

ध्यान चाहिए।

उपस्थिति चाहिए।

कई पास्टर इस समय को देने से डरते हैं।

वे सोचते हैं कि इससे सेवकाई का समय कम हो जाएगा।

वे सोचते हैं कि इससे उत्पादन कम होगा।

वे सोचते हैं कि इससे प्रगति धीमी होगी।

लेकिन सच्चाई इसका उल्टा दिखाती है।

प्रेमपूर्ण विवाह में प्रतिदिन एक घंटा निवेश करना जीवन में वर्षों जोड़ सकता है।

सामर्थ के वर्ष।

स्पष्टता के वर्ष।

ऊर्जा के वर्ष।

फलदायी जीवन के वर्ष।

एक बार फिर, निवेश किया गया समय कई गुना होकर वापस आता है।

खोता नहीं।

प्राप्त होता है।

एक पास्टर जो अपने विवाह की उपेक्षा करता है, आज एक घंटा बचा सकता है।

लेकिन बाद में वर्षों खो सकता है।

एक पास्टर जो अपने विवाह में निवेश करता है, आज एक घंटा देता है।

लेकिन बाद में वर्षों प्राप्त करता है।

यह हानि नहीं है।

यह बुद्धि है।

यह भण्डारीपन है।

यह परमेश्वर की योजना के साथ चलना है।

समय बचाने का बड़ा भ्रम

संसार लगातार पास्टरों से कहता है:

तेजी से चलो।

अधिक करो।

अधिक मेहनत करो।

कम सोओ।

सब कुछ बलिदान करो।

लेकिन यह एक गलत सोच पर आधारित है।

कि लगातार काम करना सबसे फलदायी जीवन बनाता है।

ऐसा नहीं है।

लगातार काम जीवन को खाली करता है।

विश्राम जीवन को पुनर्स्थापित करता है।

चलना जीवन को पुनर्स्थापित करता है।

प्रेम जीवन को पुनर्स्थापित करता है।

बने रहना जीवन को पुनर्स्थापित करता है।

परमेश्वर ने कभी अपने सेवकों को थकान में जीने के लिए नहीं बनाया।

उन्होंने उन्हें जुड़े रहने के लिए बनाया।

स्वस्थ।

पूर्ण।

जीवित।

जब एक पास्टर परमेश्वर के साथ चलता है, वह जीवन प्राप्त करता है।

जब एक पास्टर अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह जीवन प्राप्त करता है।

जब एक पास्टर विश्राम करता है, वह जीवन प्राप्त करता है।

वह पीछे नहीं रह जाता।

वह मजबूत हो जाता है।

वह अधिक स्पष्ट हो जाता है।

वह अधिक फलदायी हो जाता है।

अंत में, जो समय उसने सोचा कि वह दे रहा है, वह कभी खोया नहीं था।

वह उसका इंतज़ार कर रहा था।

वापस आने के लिए।

कई गुना होकर।

आशीष बनकर।

क्योंकि परमेश्वर की योजना जीवन को कभी कम नहीं करती।

वह हमेशा उसे बढ़ाती है।

परिशिष्ट B

गहरी और शांत नींद: वे घंटे जो जीवन लौटाते हैं

पास्टर यहोशू पहले विश्वास करते थे कि नींद आवश्यक नहीं है।

हमेशा कुछ अधिक महत्वपूर्ण होता था।

किसी को फोन करना।

कुछ तैयार करना।

कहीं जाना।

कोई ज़रूरत इंतज़ार कर रही होती।

कोई संकट बन रहा होता।

नींद समर्पण जैसी लगती थी।

नींद पीछे रह जाने जैसी लगती थी।

नींद अनुपयोगी लगती थी।

इसलिए उन्होंने इसे कम कर दिया।

पाँच घंटे।

कभी चार।

कभी उससे भी कम।

उन्होंने स्वयं से कहा कि वे परमेश्वर के लिए बलिदान कर रहे हैं।

लेकिन धीरे-धीरे, चुपचाप, कुछ और हो रहा था।

वे स्वयं का बलिदान कर रहे थे।

और इसकी कीमत उनकी समझ से अधिक थी।

नींद खोया हुआ समय नहीं है

अधिकांश वयस्कों को सात से आठ घंटे की नींद की आवश्यकता होती है, ताकि शरीर उसी तरह कार्य करे जैसा परमेश्वर ने उसे बनाया है।

पाँच नहीं।

छः नहीं।

सात से आठ।

यह आलस्य नहीं है।

यह शरीर की रचना है।

यह परमेश्वर की योजना है।

जब कोई व्यक्ति नियमित रूप से सात से आठ घंटे सोता है, तो शरीर के अंदर अद्भुत बातें होती हैं।

मस्तिष्क स्वयं को ठीक करता है।

स्मरण शक्ति मजबूत होती है।

हार्मोन संतुलित होते हैं।

हृदय विश्राम करता है।

रोग-प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है।

सूजन कम होती है।

ऊर्जा लौटती है।

मन की स्पष्टता बढ़ती है।

भावनात्मक स्थिरता बढ़ती है।

लेकिन जब नींद कम होती है, केवल एक या दो घंटे भी, तो नुकसान शुरू होता है।

पहले स्पष्ट नहीं।

धीरे-धीरे।

चुपचाप।

खतरनाक रूप से।

थका हुआ मस्तिष्क सही अगुवाई नहीं कर सकता

नींद की कमी निर्णय को प्रभावित करती है।

सोच धीमी हो जाती है।

निर्णय लेने की क्षमता कमजोर हो जाती है।

धैर्य कम हो जाता है।

चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है।

रचनात्मकता कम हो जाती है।

ध्यान कमजोर हो जाता है।

एक पास्टर कम नींद के साथ फिर भी प्रचार कर सकता है।

सलाह दे सकता है।

अगुवाई कर सकता है।

लेकिन वह अपनी पूरी क्षमता से बहुत कम पर कार्य करता है।

वह अधिक मेहनत करता है, लेकिन कम प्राप्त करता है।

नींद उत्पादकता को कम नहीं करती।

नींद उत्पादकता को बढ़ाती है।

एक विश्राम किया हुआ मन दो घंटे में वह कर सकता है, जिसे थका हुआ मन छह घंटे में भी कठिन पाता है।

यह केवल विचार नहीं है।

यह वास्तविकता है।

परमेश्वर नींद के दौरान सामर्थ लौटाते हैं।

नींद जीवन को बढ़ाती है

चिकित्सा अनुसंधान में एक सच्चाई बार-बार दिखाई देती है:

जो लोग नियमित रूप से सात से आठ घंटे सोते हैं, वे अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

बहुत अधिक।

नींद की कमी से इनका खतरा बढ़ता है:

हृदय रोग।

लकवा।

मधुमेह।

निराशा।

स्मरण शक्ति की कमी।

कमजोर रोग-प्रतिरोधक क्षमता।

जल्दी मृत्यु।

नींद निष्क्रिय नहीं है।

नींद पुनर्स्थापन है।

शरीर नींद में ठीक होता है।

मस्तिष्क नींद में साफ होता है।

तंत्रिका तंत्र नींद में पुनःस्थापित होता है।

जो व्यक्ति नींद की रक्षा करता है, वह जीवन की रक्षा करता है।

यीशु बिना दोषभाव के सोए

पवित्रशास्त्र में एक घटना है जो कई लोगों को आश्चर्यचकित करती है।

यीशु तूफान के दौरान सो रहे थे।

नाव हिल रही थी।

हवा तेज थी।

लहरें टकरा रही थीं।

चेले डर गए।

यीशु सो रहे थे।

वे चिंतित नहीं थे।

वे बेचैन नहीं थे।

वे संघर्ष नहीं कर रहे थे।

वे अपने पिता पर पूरी तरह भरोसा करते थे।

नींद भरोसे की सबसे शुद्ध अभिव्यक्तियों में से एक है।

क्योंकि जब आप सोते हैं, आप नियंत्रण छोड़ देते हैं।

आप उत्पादन रोक देते हैं।

आप प्रबंधन रोक देते हैं।

आप समस्याएँ हल करना रोक देते हैं।

और परमेश्वर कार्य करते रहते हैं।

भजन संहिता 127 कहता है:

"परमेश्वर अपने प्रिय जनों को नींद देता है।"
(भजन संहिता 127:2, ERV)

नींद एक उपहार है।

कमजोरी नहीं।

गहरी नींद एक शांत जीवन से आती है

हर नींद समान नहीं होती।

गहरी और शांत नींद सबसे अधिक पुनर्स्थापन करती है।

इस प्रकार की नींद स्वस्थ जीवन की लय से आती है।

नियमित समय पर सोना।

नियमित समय पर उठना।

देर रात की उत्तेजना से बचना।

मन को शांत होने देना।

शरीर को विश्राम देना।

लगातार जल्दी गहरी नींद को नष्ट करती है।

लगातार दबाव पुनर्स्थापन को रोकता है।

लेकिन शांति उसे आमंत्रित करती है।

भरोसा उसकी रक्षा करता है।

विश्राम उसे संभव बनाता है।

जो पास्टर पूरी कलीसिया का बोझ अपने मन में उठाते हैं, वे अक्सर सो नहीं पाते।

क्योंकि उनका शरीर नहीं।

उनका मन नियंत्रण छोड़ने से इंकार करता है।

जब वे कलीसिया को परमेश्वर को सौंपना सीखते हैं, नींद लौट आती है।

और नींद पास्टर को पुनर्स्थापित करती है।

नींद समय को कई गुना लौटाती है

पहली नज़र में, आठ घंटे सोना समय खोने जैसा लगता है।

आठ घंटे काम नहीं।

आठ घंटे उत्पादन नहीं।

आठ घंटे आगे बढ़ना नहीं।

लेकिन जीवन भर में, जो लोग अच्छी नींद लेते हैं, वे अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

वे अधिक समय तक स्वस्थ रहते हैं।

वे अधिक समय तक स्पष्ट सोचते हैं।

वे उन वर्षों को प्राप्त करते हैं, जिन्हें दूसरे खो देते हैं।

वे वर्ष उस समय को लौटाते हैं जो उन्होंने निवेश किया।

और अधिक।

नींद जीवन को कम नहीं करती।

नींद जीवन को बढ़ाती है।

जो पास्टर सोता है, वह बेहतर अगुवाई करता है

एक विश्राम किया हुआ पास्टर बेहतर प्रेम करता है।

बेहतर सुनता है।

बेहतर सोचता है।

बेहतर समझता है।

बेहतर अगुवाई करता है।

वह अधिक धैर्यवान बनता है।

अधिक उपस्थित।

अधिक आनंदित।

अधिक जीवित।

उसका परिवार उसे अधिक प्राप्त करता है।

उसकी कलीसिया एक स्वस्थ चरवाहा प्राप्त करती है।

उसकी आत्मा मजबूत रहती है।

क्योंकि वह अब परमेश्वर की बनाई सीमाओं से बाहर नहीं जीता।

पास्टर यहोशू ने यह धीरे-धीरे सीखा।

उन्होंने पूरी नींद लेना शुरू किया।

बिना दोषभाव के।

बिना डर के।

बिना क्षमा माँगे।

और कुछ अप्रत्याशित हुआ।

वे अधिक मजबूत हो गए।

कमजोर नहीं।

अधिक प्रभावशाली।

कम नहीं।

क्योंकि परमेश्वर ने कभी अपने सेवकों को थकान में जीने के लिए नहीं बनाया।

उन्होंने उन्हें पुनर्स्थापित जीवन के लिए बनाया।

और हर रात, गहरी और शांत नींद उनका एक शांत उपहार बन जाती है।

स्वतंत्र रूप से दी गई।

भरोसे से प्राप्त की गई।

और जीवन के रूप में लौटाई गई।